आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2753 • उदयपुर, शनिवार 09 जुलाई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सेवा संदेश लेकर रवाना हुआ नारायण रथ

परहित भावना की नींव पर ही सुखी समाज की रचना संभव है। यह बात नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी मानव ने भारत भर में सेवा और सद्भावना का संदेश लेकर रवाना हुई रथयात्रा को हरी झंडी दिखाते हुए कही। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि रथयात्रा भारत भ्रमण करते हुए सेवा और संस्कारों का संदेश देने के साथ उन दिव्यांगजनों का चयन भी करेगी, जिन्हें निःशुल्क सर्जरी अथवा कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) की आवश्यकता है। इस रथयात्रा में संस्थान की विभिन्न शाखाओं को 30 साधकों का दल शामिल है।

कृत्रिम पैर पाकर नफीसा खुश

कोलकता के मिलनशेख (33) के घर नफीसा का जन्म हुआ। परिवार में खुशी का माहौल था। लेकिन जब उसे करीब से देखा तो परिवार में मायूसी छा गई। पता चला कि जन्म से ही बायां हाथ और पैर अर्ध विकसित है। माता–पिता की चिन्ता दिन–ब–दिन बढ़ती गई। खेती करने वाले पिता का एक–एक दिन काटना मुश्किल होने लगा। दिव्यांग बेटी के इलाज के लिए जगह–जगह जाने लगे लेकिन धन के अभाव में हर जगह निराशा ही हाथ लगी। कुछ महिने पहले परिजन नफीसा को लेकर कोलकाता के पोलियों हॉस्पिटल में इलाज हेतु गए तो डॉक्टर ने कहा–यह कभी चल नहीं पाएगी। व्हीलचेयर पर ही इसका जीवन निर्भर रहेगा। माता–पिता हताश होकर घर लौट आए। एक दिन सोशल मीडिया के जरिए पता चला कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों निःशुल्क में इलाज होता है तो उनके दिल में एक आस जगी।

संस्थान के सम्पर्क कर अपनी बेटी की व्यथा सुनाई। 3 जून 2022 को नफीसा को लेकर माता–पिता संस्थान आये तब संस्थान की चिकित्सकीय टीम ने जांच की और पैर का नाप लेकर निःशुल्क कृत्रिम पैर बनाकर बेटी को पहनाया और कुछ दिन उसे चलने की ट्रेनिंग दी गई। नफीसा सुल्ताना मुस्कुराते हुए आराम से जब चलने लगी तो माता–पिता के आंखों से खशी से खुशी के आंसू बह निकले।

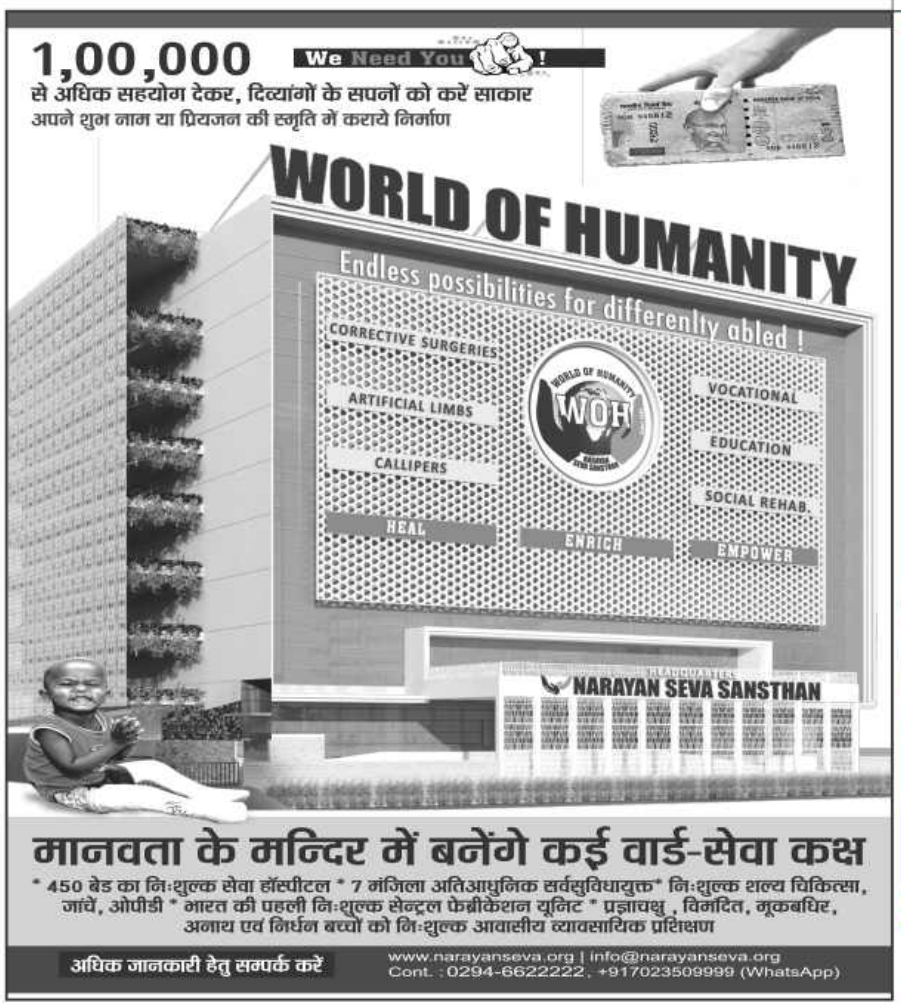

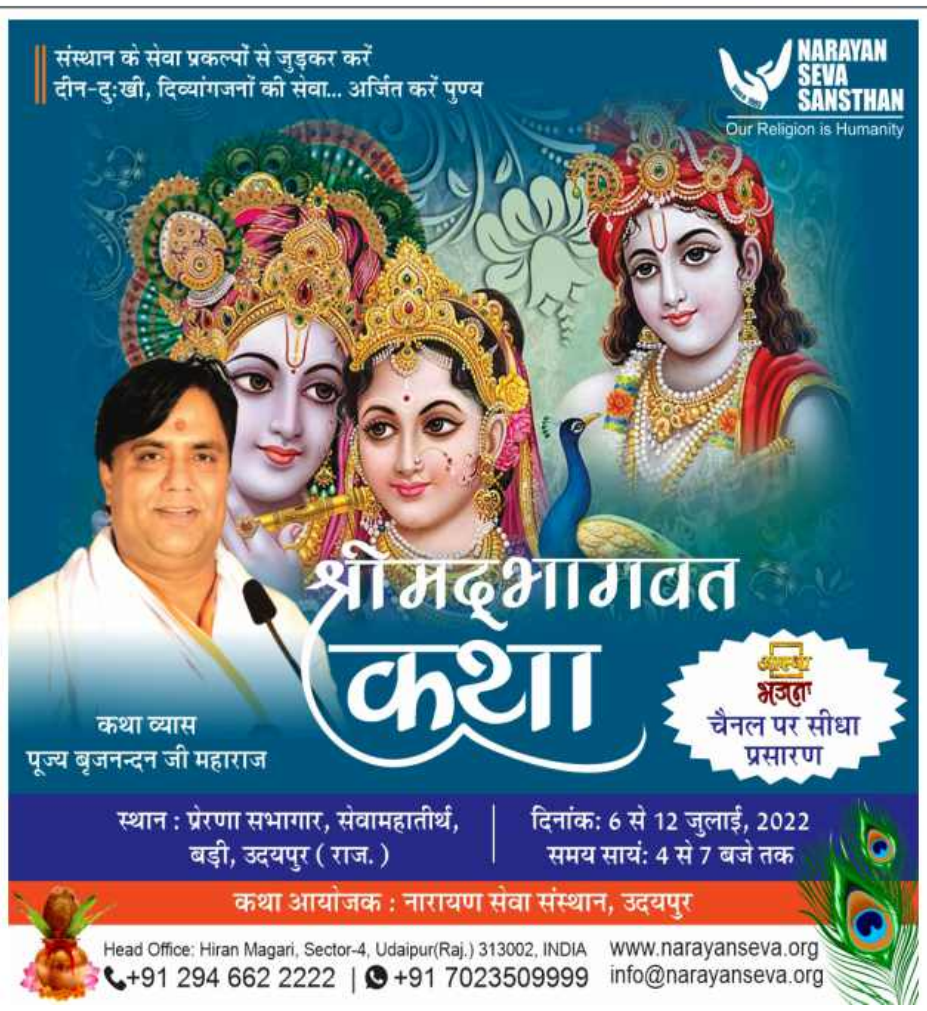

हेल्थ वण्डर वर्ल्ड

नारायण सेवा संस्थान में पधारे

211 मिनिट की देह यात्रा.....सृष्टि का महानतम आश्चर्य

स्वस्थ शरीर मानव जीवन का महत्त्वपूर्ण देवालय है। इसकी सेवा एवं सत्कार हम पवित्र भावनाओं के साथ करते रहें, ताकि मानव अपने देहरूपी देवालय को अन्दर से पहचान कर जीवन में नये कर्मों का विचार करें।

भाव जितने शुद्ध होंगे, देह उतनी ही पूज्य होगी, और पूज्य शरीर ही पीड़ितों, असहायों, दीन–दुःखियों की सेवार्थ आगे आते हैं। संस्थान ने लियों का गुड़ा, बड़ी आश्रम में 20 हजार स्क्वायर फीट जमीन पर विज्ञान से सम्बन्धित संग्रहालय (हेल्थ वण्डर वर्ल्ड) का निर्माण किया है।

मुँह–मुख्य द्वार के दायीं तरफ आपको विशाल 20 फिट की मानव मुख की आकृति दिखाई पड़ेगी। वह मानव मुख स्वतः खुलेगा। उसकी जिह्वा के मार्ग से मुँह के भीतर प्रवेश कर सकेंगे, और कान के रास्ते से बाहर निकलेंगे।

फेफड़ा – लक्ष्मण झूले से आगे बढ़ने पर आपको 20 फिट का सिकुड़ता–फैलता फेफड़ा दिखाई देगा, जो कुल 3 लाख मीलियन रक्त कोशिकाओं से निर्मित है, जो फैलाने पर चौबीस हजार कि.मी. तक लम्बी हो सकती हैं। एक्जास्ट फेन कहे जाने वाले फेफड़े में आपको सारी गतिविधियाँ चलायमान होती दिखाई देगी।

हाथ – हमारे हाथ देह देवालय का भारोत्तोलन यन्त्र है, जिसे हम क्रेन भी कह सकते हैं। यात्रा के दौरान आप 40 फिट लम्बे हाथ में प्रवेश कर सम्पूर्ण संरचना का अध्ययन करेंगे, और हथली के मार्ग से बाहर निकलेंगे।

हृदय –हैल्थ वण्डर वर्ल्ड में बना 20 फिट का धड़कता पम्पिंग यंत्र कहलाने वाला हृदय जब आप अन्दर से देखोगे तो होंगे आश्चर्य चकित।

मस्तिष्क – मुख्य द्वार के ठीक सामने मानव मस्तिष्क का भीतरी भाग आपको दिखाई देगा। यह हमारे देह देवालय में संगणक (नियन्त्रक यन्त्र) अर्थात कम्प्यूटर का कार्य करता है। इसी मस्तिष्क में लगभग एक करोड़ विचार संग्रह रखने की क्षमता है।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

मेघनाद ने कहा पिताजी मेरे को देवताओं से तपस्या के बल से रथ मिला है। ऐसे शस्त्र मिले हैं मैं यज्ञ करुंगा। और यज्ञ के बाद मेरे को कोई जीत नहीं पायेगा। ऐसा कुयज्ञ करने लगा तो ये रावण तो मरेगा, ये मेघनाद भी मरेगा।

और शेशावतार लक्ष्मण जी ने कहा अब तेरा काल आ गया। श्रीराम जी की सौगन्ध खाता हूँ लौटकर के तभी आऊंगा जब तेरा माथा तेरी माता के गोद मे गिरा दूंगा। और कुयज्ञ हो रहा था। मेघनाद नाना प्रकार के भैंसों के माँस का हवन कर रहा था। अंगद ने बाल पकड़े, हनुमान जी ने माथा खींचा और जामवंत जी ने लात मारी। और वो क्रोधित होकर के दौड़ा शेशावतार लक्ष्मण जी ने कहा अब तक तुझे बहुत खेला लिया, अब तक तूने बहुत माया करली, कभी आकाश मार्ग में जाता है, कभी किधर दौड़ता, कभी अन्तर्धान होता है।

बोलिये रामचन्द्र भगवान की जय। और विभीशण ने कहाँ प्रभु आप तो अकेले हैं। आप पैदल हैं, ये रावण तो सोने के रथ में आया है। मैं भयभीत हो रहा हूँ। प्रभु ने कहा, भयभीत होने की कहां जरुरत है ? विभीशण मेरे शौर्य के पहिये हैं, मेरे साहस का पताका है, मेरे वीरता की दुदंम्भी है। मेरे आत्मबल के पहिये हैं। मेरा रथ मेरे गुणों का रथ , मेरे सद्गुणों का रथ, नवधा भक्ति का रथ, ऐसा रथ और रामचरित मानस में प्रसंग आता है कि देवराज इन्द्र ने भी रथ भेज दिया और रावण बहुत दुर्भाव करने लगे। बहुत कुछ बोलने लगा। तो भगवान श्रीराम ने कहा था। हे कायर बकवास करना बन्द कर। ले मेरे तीरों को सम्भाल और पारब्रह्म परमात्मा ने 31 तीर एक साथ छोड़े हैं। एक तीर ने नाभि के अमृत को छीन लिया दस तीरों ने दस माथे काट डाले और बीस तीरों ने बीस हाथ काट डाले। बोलिये रामचन्द्र भगवान की जय हो।

स्थानीय पार्षदों ने देखी नारायण सेवा

नगर निगम उदयपुर के पार्षदों के एक दल ने शुक्रवार को हिरण मगरी सेक्टर–4 स्थित नारायण सेवा संस्थान परिसर में विभिन्न निःशुल्क सेवा प्रकल्पों का अवलोकन किया।

इस दल में अरविंद जी जारोली, रमेश जी जैन, लोकेश जी गौड़, मुकेश जी शर्मा, देवेन्द्र जी पुजारी व चन्द्र प्रकाश जी सुहालका थे। संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने उनका स्वागत करते हुए संस्थान द्वारा हाल ही में जम्मू–कश्मीर के गादरबल व तंजानिया (द. अफ्रीका) में हादसों में हाथ–पांव गंवाने वालों के लिए आयोजित हुए कृत्रिम अंग सेवा शिविरों की जानकारी दी। मीडिया प्रभारी विष्णु शर्मा जी हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़, महिम जी जैन व शीतल जी अग्रवाल ने पार्षदों को पगड़ी दुपट्टा पहनाकर संस्था साहित्य भेंट किया। पीएण्डओ विभाग के प्रभारी डॉ. मानस रंजन जी साहू ने कृत्रिम निर्माण से लेकर दिव्यांग को पहनाने व उनके उपयोग प्रशिक्षण की जानकारी दी। पार्षद दल ने केलीपर्स, सिलाई व कम्प्यूटर प्रशिक्षण कक्षाओं, मूक–बधिर व दिव्यांग बच्चों के साथ ही ऑपरेशन के लिए देश के विभिन्न भागों से आए दिव्यांग व उनके परिजनों से बात की।

पार्षदों ने पीड़ित मानवता की सेवा में संस्थान के कार्यों को बताते हुए उनमें सहयोग की पेशकश की।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

जीवन कितना लम्बा और है ? यह कौन जान सका है ? फिर व्यामोह के पाश में स्वयं को क्यों आबद्ध करूँ? क्यों कल की चिंता में डूबा रहूँ ? क्यों आज के आनंद से वंचित रहूँ ? परमात्मा ने प्रकृति की रचना करके असंख्य प्रकार के जीव बनाए हैं।

आश्चर्य है कि अधिकतर जीवों में से कल की कोई चिंता में नहीं रहता है। यह बात ठीक है कि मनुष्य को बुद्धि एवं विवेक मिला है तो वह त्रिकाल विचार कर सकता है। करना भी चाहिए, पर किसका? होना तो यह चाहिए कि हम भूतकाल में मिली असफलताओं से सीखते रहें। वर्तमान को सुधारें। भविष्य स्वयं सुखद हो जाएगा। हमें यदि भावी की चिंता करनी है तो यही करनी चाहिये कि जिस उद्देश्य से परमात्मा ने हमें बनाया, यह यदि छूट रहा है तो भविष्य में उसकी प्राप्ति में की चिंता करे। भौतिकवादी चिंता बस चिंता है, मानवतावादी चिंता तुरंत चिंतन में बदल जाती है। तो चिंता में क्यों उलझें, चिंतन को ही अपनायें।

कुछ काव्यमय

सेवा ज्योति प्रकट भई,
तो भागे तमकार।
वही मनुज होता सफल,
वही करे ललकार।।
जिस जीवन का ध्येय हो,
करना बस उपकार।
वो ही समझा मान लो,
मानव जीवन सार।।
पीड़ा में कोई पड़ा,
नहीं मुझे संताप।
इससे बढ़कर है कहाँ,
इस धरती पर पाप।।
जो परपीड़ा पिघलता,
वो सच्चा इंसान।
हर कोई ऐसा बने,
क्यों कोई नादान।
करुणा की नदियां बहे,
जिस मानव के मांय ।,
उसको प्रभु भी प्रेम दे,
शरणागति पा जाय।।

अपनों से अपनी बात

न छोड़ें सेवा का कोई मौका

हमारे जीवन में भी कई बार परमात्मा आते हैं–अलग–अलग रूप में। पीड़ितों की सेवा करें, सहज उनके दर्शन हो जाएंगे।

एक सेठ को सपने में प्रभु ने दर्शन दिए और कहा–'कल, मैं तुम्हारे घर आऊँगा।' सुबह सेठ अत्यन्त प्रसन्न थे और प्रभु के स्वागत की तैयारियों में जुट गए। विशेष स्वागत द्वार बनवाए, अनेक स्वादिष्ट व्यंजन बनवाए। सेठजी स्वयं भी सज–धज कर द्वार पर पलकें बिछाए खड़े थे। तभी दुर्घटना में घायल एक व्यक्ति आया, शरीर के कुछ हिस्सों से रक्त बह रहा था। उसने सेठ जी से सहायता का आग्रह किया। सेठजी ने कहा–अभी मरहम पट्टी का समय नहीं है। अभी यहाँ भगवान आने वाले हैं। मैं तुम्हारी मरहम

पट्टी में लगा, और उधर भगवान आ गए तो मैं उनका स्वागत – सत्कार कैसे करूंगा? दुःखी मन से घायल वहाँ से चला गया। उसके जाते ही एक भूखा द्वार पर आया, भूख के मारे पेट और पीठ एक हो रहे थे, तन पर वस्त्र नहीं थे।

सेठ ने हाथ जोड़कर याचना की–सेठजी चार दिन से भूखा हूँ। खाने को कुछ दे दीजिए, भगवान आपका भला करेंगे। सेठजी ने उत्तर दिया–भगवान तो मेरा भला करने आने ही वाले हैं। तुम फिर कभी आ जाना। भूखा व्यक्ति दुःखी होकर वहाँ से चला गया। सेठ जी दिनभर भगवान के इंतजार में बिना कुछ खाए– पीए खड़े रहे, परंतु भगवान नहीं आए। आखिर निराश होकर देर रात्रि में जब सेठ जी भी सो गए।

भगवान ने पुनः उन्हें सपने में दर्शन दिए। सेठजी ने उलाहना दिया– आप तो पधारे ही नहीं। आपने झूठा आश्वासन क्यों दिया? मैं दिनभर आपकी प्रतीक्षा में भूखा–प्यासा खड़ा रहा, पाँवों में दर्द होने लगा, तब भी मैं आपका इंतजार करता रहा। इस पर भगवान बोले –'मैं तो आया था तुम्हारे पास दो बार, परंतु तुम ही मुझे नहीं पहचान पाए, तो इसमें मेरी क्या गलती? प्रथम बार अपने घाव पर मरहम लगवाने और दूसरी बार पेट की भूख मिटाने।' –**कैलाश 'मानव'**

बड़ा 'छोटू'

जब हमारे सामने कोई छोटा व्यक्ति अर्थात् गरीब–निर्धन, दीन–दुःखी आदि आता है तो, हमारा व्यवहार उसके साथ अलग प्रकार का होता है और अगर हमारे कोई धनवान, रूतबे वाला, ऊँचे पद वाला सम्मानित व्यक्ति हो तो, हमारा व्यवहार उसके साथ अलग होता है। हम बड़े लोगों के साथ सलीके से पेश आते हैं और छोटे लोगों को सम्मान नहीं देते और उनके साथ तू–तड़ाके से बात करते हैं। आखिर हमारे व्यवहार में ऐसा अंतर क्यों?

उदाहरण के तौर पर ये छोटू जो चाय–नाश्ते की दुकानों, होटलों, रेस्टोरेंट आदि पर काम करते हैं, ये छोटे नहीं होते, बल्कि अपने घर के बड़े होते हैं। आइए एक उदाहरण के माध्यम से इस तथ्य को समझने का प्रयास करते हैं

एक व्यक्ति अपनी नई चमचमाती कार में ढाबे पर खाना खाने गया। वहाँ एक छोटा लड़का था, जो ग्राहकों को खाना परोस रहा था। कोई उसे ऐ छोटू ! तो कोई ओए छोटू! कहकर उसे बुला रहा था। वह नन्हीं –सी जान ग्राहकों के बीच उलझ कर रह गई।

यह संबोधन उस व्यक्ति के मन को कचोट रहा था। उसने छोटू को छोटू जी कहकर अपनी तरफ बुलाया। बहुत प्यारी–सी, मासूम–सी मुस्कान लिए छोटू उस व्यक्ति के पास आकर बोला –जी साहब, क्या खाएँगें?

साहब नहीं, भैयाजी कहोगे तो बताऊँगा –व्यक्ति ने प्यार से उत्तर दिया।

यह सुनकर छोटू मुस्कुरा दिया और आदर के साथ बोला – भैयाजी, आप क्या खाओगे? तब व्यक्ति ने खाना ऑर्डर किया। खाना आ जाने पर वह खाना खाने लगा, परंतु छोटू के लिए वह ग्राहक नहीं, मेहनत बन गया था। छोटू उसकी एक आवाज पर दौड़ा चला आता और प्यार से पूछता–भैया जी, और क्या लाऊँ? खाना अच्छा तो लगा ना आपको? हाँ छोटू जी। आपके प्यार ने इस खाने को और अधिक स्वादिष्ट बना दिया है –व्यक्ति ने उत्तर दिया। खाना खाने के बाद उस व्यक्ति ने बिल चुकाया और सौ रूपये छोटू जी के हाथ पर रख कर कहा – यह तुम्हारे हैं। मालिक से मत कहना।

जी, भैया जी – छोटू ने उत्तर दिया।

"इन रुपयों का क्या करोगे?"

"आज माँ के लिए चप्पलें ले आऊँगा। चार दिनों से माँ के पास चप्पलें नहीं है। नंगे पाँव धूप में चली जाती है साहब, लोगों के घर काम करने।"

इतना सुनते ही व्यक्ति की आँखें भर आईं। उसने आगे पूछा –और कौन–कौन तुम्हारे घर में? माँ, मैं और छोटी बहन हैं। पापा भगवान के घर चले गए। अब वह व्यक्ति और कुछ भी नहीं पूछ पाया। उसने कुछ और रूपए जेब से निकाले और बोला –आज घर पर आम ले जाना, अपने और अपनी बहन के लिए आइसक्रीम ले जाना, और माँ के लिए एक साड़ी भी ले जाना। अगर माँ पूछे ताक बता देना कि पापा ने एक भैया को भेजा था, वही ये सब देकर गए हैं। छोटू व्यक्ति से लिपट कर रोने लगा। व्यक्ति ने छोटू को गले लगा लिया।

वास्तव में, छोटू अपने घर का बड़ा निकला, जो पढ़ाई की उम्र में अपने घर का बोझ उठा रहा था। – **सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश व मनुभाई खुश होते हुए वापस उस व्यक्ति के पास आये सबने मिल कर आगामी रविवार को मीटिंग आयोजित करने का निर्णय कर लिया। रेस्टोरेन्ट का पता देते हुए निमन्त्रण पत्र छपवा लिये गये। उस व्यक्ति के सम्पर्क के सभी लोगों को ये निमन्त्रण पत्र भिजवा दिये गये।

मीटिंग में अभी कुछ दिन शेष थे, तैयारी कुछ करनी नहीं थी। डेट्रोईट में कैलाश का गायत्री परिवार के सम्पर्क का परिचित था। कैलाश इस बीच दो दिन वहां चला गया। वहां उस परिचित के अन्य मित्रों से भी मिलना हो गया। सबको अपनी अमेरिका यात्रा का उद्देश्य बताया तो छोटा–मोटा चन्दा सबने दे दिया। कैलाश के दिल को हल्की सी राहत मिली कि चलो, कुछ तो हुआ।

वापस लौटा तो रविवार को आयोजित बैठक की तैयारियां शुरु कर दी। एक प्रोजेक्टर किराये पर मंगवा लिया। स्लाइडें उदयपुर मे पहले ही बनवा ली थीं। बैठक में 50 के लगभग लोग एकत्र हो गये। सबको पौष्टिक आहार वितरण, अनाथ बच्चों का लालन पालन, दिव्यांगों के ऑपरेशन वगैरह की स्लाइडें बताई। सभी लोग काफी प्रभावित हुए। बैठक के बाद सबने कैलाश की सराहना की और पत्रम–पुष्पम के रूप में अपना योगदान दिया। किसी ने 100, किसी ने 50 तो किसी ने 10–20 डालर दिये। कुल मिलाकर 1200 डालर एकत्र हो गये।

इस बैठक में ही प्रतापगढ़ के डॉ. नरेन्द्र हड़पावत मिल गये। उन्होंने कैलाश व डॉ.अग्रवाल को भोजन पर अपने घर निमंत्रित किया। डॉ. हड़पावत अपने गांव में भी ऑपरेशन शिविर आयोजित करना चाहता था। भोजन के दौरान उन्होंने अपनी यह इच्छा व्यक्त की तो कैलाश ने तुरंत हां भर दी। हड़पावत चाहते थे कि शिविर प्रतापगढ़ स्थित उनकी हवेली में लगे जिससे उनके पिताजी को प्रसन्नता मिल जाये। उन्होंने अपने छोटे भाई को फोन कर सारी बात बता दी। शिविर का सारा खर्चा हड़पावत उठाने को तैयार था।

अंश - 150

शिव आराधना के पावन श्रावण मास में संस्थान से जुड़कर करें दीन दुःखी दिव्यांगजनों की सेवा....और पाये पुण्य

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

कथा आयोजक :
अनिल कुमार मित्तल, अरूण कुमार मित्तल एवं सपरिवार, आगरा

श्रीमद्भागवत कथा

दिनांक:
14 से 20 जुलाई, 2022
समय : सायं
4.00 से 7.00 बजे तक

संस्कार
चैनल पर सीधा प्रसारण

कथा व्यास
डॉ. संजय कृष्ण 'सलिल' जी महाराज

स्थान : श्री खाटूश्याम मन्दिर, जीवनी मंडी, आगरा (उ.प्र.)
स्थानीय सम्पर्क सूत्र :9837362741, 9837030304

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

पौष्टिक साग जो राजस्थान में खूब चाव से खाए जाते हैं

कैर : कैपरिस डैसिडुआ, एक कांटेदार झाड़ी है। जिसकी लंबाई, 6 मीटर तक होती है। इसका फल, कैर सूखने के बाद गहरे भूरे रंग का हो जाता है। इसे सूखाकर खाया जाता है। यह प्रोटीन व फाइबर का अच्छा स्रोत है। इसमें कैल्शियम, फॉस्फोरस, जिंक, लोहा और मैंगनीज होते हैं।

सांगरी : यह राजस्थान के राजकीय वृक्ष खेजड़ी की फली है। इनमें प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम, जिंक, लोहा और पोटेशियम अधिक मात्रा में होता है। कहा जाता है कि पुराने जमाने में अकाल के समय खेजड़ी की छाल को पीसा जाता था। इसकी रोटियां बनाई जाती थी।

कुमटिया : ये अकेशिया सेनेगल के बीज है, जो सपाट, भूरे रंग की फलियों में पाए जाते है। इस वृक्ष से गोंद मिलता है, जिससे लड्डू बनाए जाते हैं। कुमटिया का पेड़ वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके मिट्टी को अधिक उपजाऊ बनाता है।

गुंदा : इसकी सब्जी और अचार बनाया जाता है। यह पकने के बाद मीठा व लसलसा हो जाता। इसे फल तरह खाया जाता है। गुंदा उच्च रक्तचाप व सूजन का नियंत्रण करने में लाभदायक होता है। यह पेट के अल्सर और जिगर के फाइब्रोसिस के निवारण में भी सहायक होता है।

काचरी : यह छोटे तरबूज के समान दिखती है और बेलो पर फलती है। काचरी की सब्जी, अचार और चटनी बनाई जाती है। सूखी, पिसी हुई काचरी पकनावो में खटास लाने के लिए आमचूर की भांति मिलाई जाती है।

बोर : यह बेर के नाम से भी जाना जाता है और देश के कई राज्यों में पाया जाता है। बोर का वृक्ष, शुष्क जलवायु और विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में पनपता है। इसमें विटामिन सी और फाइबर प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

ग्वार : ग्वार लोहा, फॉलिक एसिड और विटामिन के का स्त्रोत है। यह शुगर और कोलेस्ट्रोल को नियंत्रित करने मे लाभदायक हो सकता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

भगवान की कृपा है लाला। वो ही ले जाते हैं। जब दूसरी बार यु. एस.ए. जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ, पहली बार तो डॉक्टर आर.के.अग्रवाल साहब के साथ गये थे। महीना भर रहने का अवसर प्राप्त हुआ। कनाक्टीकट में आदरणीय चिमन भाई पटेल, मनु जी के साडूजी का नाम चिमन भाई पटेल डॉक्टर साहब उनके घर पर रहे, मनुभाई की धर्मपत्नि जया बेन जी जो स्वर्ग से हमें आशीर्वाद दे रही है। उन्होंने और उनकी छोटी बहन ने बड़े प्रेम से गर्म गर्म नाश्ता बनाकर रोज नया नया नाश्ता बनाकर खूब प्रेम से करवाते थे। और दिन का खाना तो न्यूयार्क में खाने जाते थे। कनाक्टीकट से न्यूयार्क का घंटे डेढ़ घंटे का रास्ता है।

वहाँ से सायंकाल को वापस आकर के शाम का भोजन कनाक्टीकट में करते थे। और जब पहली बार भगवान ने भेजा डॉक्टर आर.के.अग्रवाल के साथ में, और दुसरी बार फिर भगवान की कृपा से जाना हुआ। उस समय सोहन लाल जी पूर्बिया साहब, देवकीनन्दन जी पालीवाल साहब और उनको लेकर पधारे उनके साथ गये।

भगवान की परम् कृपा हुई, तो ईश्वर ऐसी कृपा कर देता किसको कहाँ मिला देता। जोशी साहब को मिलाया बस में। पहले का कोई परिचय नहीं। पूर्व जन्मों का था आदरणीय मुकेश जी साहब उनकी बेटी ईशा का विवाह किया अभी सालभर पहले ही 2019 में। उसके विवाह के पूर्व का समारोह दो तीन के लिये उदयपुर में किया था। उदयपुर की सारी हॉटले बुक करवायी थी। उदयविलास, ट्राईडेन्ट, लीला पेलेस, शिकारवाड़ी उस समय उनकी तरफ से संदेश आया आपके यहाँ जो बच्चे हैं। जिनका तीन दिन का भोजन मुकेश भाई अंबानी परिवार की तरफ से कराना चाहते हैं।

बड़ी प्रसन्नता हुई। सारी तैयारी की गई मिठाई, पुड़ी, सब्जी, हलवा, फिर दूसरे दिन भगवान की परम् कृपा से स्वयं मुकेश जी अंबानी उनकी पत्नी नीता जी, उनका पुत्र अंकित पधारे, ईशा जी पधारी, और जिस परिवार में ईशा जी का संबध किया गया अजय जी पीरामल उनकी धर्मपत्नी स्वाति जी पीरामल, उनके सुपुत्र जिनके साथ उनका विवाह हुआ अजय जी का गाँव बग्गड़ में मुझे जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 503 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023